Phoenix: International Multidisciplinary Research Journal
Vol 1, No. 3, July-Sep, 2023
ISSN:2583-6897

वृद्ध जीवन की त्रासदी

राकेश राठौर
शोधार्थी पी–एच.डी. (हिन्दी) डॉ. सी.व्ही. रामन् विश्वविद्यालय,करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. रेखा दुबे
शोध निर्देशक सह–प्राध्यापक (हिन्दी) डॉ. सी.व्ही. रामन् विश्वविद्यालय,करगी रोड, कोटा,बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

मानव के जीवन में साहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य समाज की वास्तविकता का निरूपण करता है। साहित्य के माध्यम से हमेशा ही समाज में व्याप्त घटनाओं, विशेषताओं, परिस्थितियों आदि को चित्रित किया जाता है। साहित्य समाज की आधारशिला होता है। साहित्य ही समाज में प्रचलित परम्पराओं तथा समस्याओं पर विमर्श करने की तरफ ध्यान आकर्षिक करता है। हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श, स्त्री–विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर–विमर्श के बाद अब वृद्ध–विमर्श की गूंज सुनाई देने लगी है। आजकल समाज में युवा पीढ़ी का बोलबाला है। उसे देखते हुए वृद्ध जीवन पर विमर्श करना भी योग्य ही है।

वृद्धावस्था को लेकर हमारे मन में एक ही तस्वीर उभरती है, जो शिथिल शरीर, गिरे हुए दांत, सफेद बालों के साथ जीवनयापन करते हैं। मनुष्य के जीवन में पहले शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था के पश्चात वृद्धावस्था आगमन होता है। शैशवास्था में बच्चा दूसरों पर निर्भर रहता है। किशोरावस्था में जोश, ऊर्जा, शक्ति इत्यादि से परिपूर्ण होता है। प्रौढ़ावस्था में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है। वृद्धावस्था तक पहुंचते–पहुंचते व्यक्ति का शरीर शिथिल हो जाता है। व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहने को विवश हो जाता है। इसी विवशतावश व्यक्ति अपने आप को कमजोर तथा जीवन से हारा हुआ महसूस करता है किन्तु वृद्ध व्यक्ति ज्ञान का भण्डार होता है और अपने ज्ञान से वह हमें सभ्यता, संस्कृति, आचरण सद्व्यवहार आदि का ज्ञान करवा सकता है। यदि वृद्ध व्यक्ति को उचित सम्मान मिले तो वह समाज को नई दिशा दे सकता है। वृद्धावस्था जीवन की यह अवस्था है जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है।

प्रस्तावना :– मनुष्य जीवन के तीन पड़ाव है– शैशवावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था। शैशवावस्था में बालक का पोषण और संरक्षण माता–पिता करते हैं। उनके जीवन को दशा और दिशा देते हैं। युवावस्था में जीवन ऊर्जा से भरा होता है। जीवन में बड़े–बड़े सपने देखते हैं और पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं। उसी तरह वृद्धावस्था भी जीवन का एक अनिवार्य पड़ाव है। वृद्धावस्था को जीवन की संध्या कहा जाता है। वृद्धावस्था तक आते–आते मानव शरीर थक जाता है। शरीर के सभी अंग धीरे–धीरे शिथिल होने लगता है। शरीर

बीमारियों का घर बन जाता है। अधिक दवाइयों के प्रभाव से उसका विपरीत असर पड़ने लगता है। शरीर कमजोर होने लगता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में वृद्ध–विमर्षः– आधुनिक हिन्दी साहित्य में विभिन्न विमर्शों का दौर चल रहा है। स्त्री–विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श, प्रवासी विमर्श, आदि। उसी तरह वृद्ध–विमर्श भी आधुनिक साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बन गया है। हिन्दी साहित्य में वृद्ध–विमर्श की परम्परा तब शुरू हुई जब साहित्य में संवेदनाओं के रूप को संयुक्त–परिवार एवं एकल–परिवार की जटिलताओं को विश्लेषण करने लगा। भारत में लंबे समय तक संयुक्त–परिवार की परम्परा रही। आधुनिक काल में व्यक्ति विशेष की उन्नति को लेकर समाज के लोग सचेत होने लगे। स्त्री हो या पुरूष अपने विकास को लेकर अधिक सोचने लगा। इस समय अर्थ उपार्जन कठिन होने से एक व्यक्ति को काम करके पूरे परिवार का भरण–पोषण करना कठिन हो गया। आर्थिक दबाव को कम करने के लिए भी संयुक्त–परिवार टूटने लगा एवं एकल–परिवार में परिवर्तित होने लगा। परिवार के इस तरह टूटने से इसका सीधा असर बुजुर्गों पर पड़ने लगा। संयुक्त–परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति को अकेलेपन का सामना उस तरह नहीं करना पड़ता है जितना एकल–परिवार में करना पड़ता है। संयुक्त–परिवार में वृद्ध व्यक्ति अपने नाती–नातिन के साथ खेलने में अपना समय व्यतीत करते हैं। पास–पड़ोस में हम उम्र के लोगों से उठना बैठना होता है जिनसे विचार–विमर्श करके अपना समय व्यतीत कर सकते हैं। एकल–परिवार में जब घर के बेटे–बहू नौकरी करने चले जाते हैं बच्चे स्कूल चले जाते हैं तब वृद्ध माता–पिता को अपना समय बिताना कठिन हो जाता है। वृद्धावस्था में कोई आर्थिक आय नहीं होने से परिवार में उनको बोझ समझा जाने लगता है। उनकी संवेदनाओं को महत्व नहीं दिया जाता है। जब तक उनके हाथ–पैर चलते हैं तब तक ठीक है पर उसके बाद उनको अनुपयोगी समझा जाने लगता है। वृद्ध माता–पिता का भरण–पोषण, इनकी दवाइयों के लिए खर्च करना उन्हें अनावश्यक खर्च लगता है। उनके रहते किटी–पार्टी, घूमना फिरना नहीं हो पाता क्योंकि घर में दो लोग है उनके लिए खाना बनाना ही पड़ता है और उन्हें पार्टियों में लेकर जाना अपमानित समझते हैं।

आधुनिक युग में लोग जितने आधुनिक और आर्थिक संपन्न हो रहे हैं उतने ही संवेदन शून्य होते जा रहे हैं। देखा जाए तो शहर के वृद्धाश्रम में गरीब घरों के बुजुर्ग नहीं होते, उसमें आर्थिक संपन्न और समाज में मान–प्रतिष्ठा रखने वाले घरों के बुजुर्ग ही पाए जाते हैं। वृद्ध को वृद्धाश्रम में रख कर जाने के बाद उनका खोज खबर लेना भी जरूरी नहीं समझते हैं। वर्तमान समय में वृद्धाश्रम की संख्या बढ़ रही है इसका संकेत यह है कि आधुनिक समय में वृद्धाओं की उपेक्षा अधिक हो गई है। पहले बच्चे खाली समय अपने दादा–दादी के साथ बिताते थे किन्तु वर्तमान समय में बच्चे मोबाइल, टेलीविजन, लेपटॉप में अपना सारा समय बिताते हैं। अब दादा–दादी कहानी सुनने की परम्परा जैसे समाप्त ही हो गई।

भीष्म साहनी की कहानी में वृद्ध–विमर्ष :– भीष्म साहनी की कहानी 'एक चीफ की दावत' एक वृद्धा की मानसिक संत्रास और अपेक्षा की कहानी है। मि. शामनाथ के घर उनके चीफ की दावत है। साथ ही उनके साथ काम करने वाले लोग भी आने वाले हैं। घर को आधुनिक दिखाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। कौन–सा समान कहाँ रखा

जाए तय किया जा रहा है। साथ ही घर के लोगों को अच्छा कपड़ा पहनने को बोला जाता है। चीफ के इस दावत में माँ सबसे बड़ी समस्या है। उसे लोगों के बीच नहीं ला सकते न ही सोने के लिए बोल सकते हैं क्योंकि माँ सोने के बाद खर्राटे की आवाज आती है। शामनाथ की पत्नी बोलती है उसे पड़ोस में उनकी सहेली के पास भेज देते हैं। पर शामनाथ यह बोलते हुए मना करते हैं वहाँ जाने से फिर से आना जाना शुरू हो जाएगा जो मैंने किसी तरह बंद किया है। क्या विडंबना है बुजुर्ग लोगों को अपने पड़ोस में समान उम्र के लोगों से भी नहीं मिलने दिया जाता है। हम उम्र के लोग मिल कर अपना सुख–दुःख की बात करके अपना मन हल्का कर सकते हैं इसमें भी बेटे–बहू को लगता है कि घर की बातें बाहर चली जाएगी और माँ फिर से अपनी सहेली से मिलना शुरू करेगी। अभी शामनाथ को यही चिंता है माँ को कैसे लोगों से छिपा कर रखा जाए। शामनाथ समस्या का समाधान करते हुए कहता है– "माँ हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदें में बैठना। फिर हम जब यहाँ आ जाए, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।"[1] माँ बेटे की मान–प्रतिष्ठा बचाने के लिए बेटे के कहे निर्देश का अनुसरण करती है। माँ को अंदर में जाकर सोने से भी मना किया जाता है ताकि खर्राटे की आवाज ना आने लगे। शामनाथ के घर चीफ के साथ बहुत सारे स्टाफ भी आते हैं। बैठक में शराब पीते और बातें करते बहुत देर हो जाती है। माँ बरामदें में बैठे इंतजार करते–करते सो जाती है। शामनाथ अपने स्टाफ के साथ बरामदें में आते हैं तब देखता है कि माँ सो गई है और खर्राटें ले रही है। शामनाथ को लगता है उसकी मान–प्रतिष्ठा धूल में मिल गई। माँ आवाज सुन कर जग जाती है लज्जित हो जाती है। चीफ माँ से बात करने लगते है। यहाँ भी शामनाथ माँ को अंग्रेजी में बात को दोहराने के लिए बोलते हैं। बेचारी माँ बेटे के सम्मान के लिए बोलती है पर गलत बोल जाती है जिससे सभी हंस पड़ते हैं। चीफ को माँ की बनाई हुई पुरानी फुलकारी बहुत पसंद आती है। चीफ माँ से नई फुलकारी बनाने के लिए आग्रह करते हैं। शामनाथ माँ से नई फुलकारी बनवाने के लिए वादा कर लेते हैं। ये बिना सोचे कि बूढ़ी माँ अब फुलकारी बना पाएगी भी या नहीं। वही बेटा माँ को चीफ की नजरों से छुपाने के लिए तरह–तरह के तरकीब ढूँढ़ रहा था जब माँ के फुलकारी बनाने से अपनी पदोन्नति की आशा दिखती है तो माँ की परेशानी को सोचे वगैर फुलकारी बनाने को कहता है। शामनाथ जहाँ एक ओर माँ को चीफ से छुपाता था वहीं दूसरी तरफ अपनी उन्नति के लिए माँ का उपयोग करता नजर आता है।

ज्ञानरंजन की कहनी में वृद्ध–विमर्ष :– ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' में दो पीढ़ियों के बीच का अलगाव दिखाई पड़ता है। पुरानी पीढ़ी अपनी मूल्यों को छोड़ना नहीं चाहते, उन्हें नई पीढ़ी के मूल्यों से कोई परहेज नहीं है परन्तु वे अपने को आधुनिक समय के अनुसार बदलना नहीं चाहते जबकि बेटे चाहते हैं पिताजी आधुनिक समय के अनुसार खुद को बदले। इसी से 'पिता' कहानी में पिता और बेटे के बीच शीतयुद्ध चलती है। बेटा चाहता है कि पिता आधुनिक समय के अनुसार ढ़ले। ढ़ंग का कपड़ा सिलवा कर पहने, घर में आधुनिक सुख–सुविधाएँ है उनका उपभोग करें। घर में चार लोग आते–जाते हैं इसलिए अच्छे कपड़े पहन कर रहा करे। ताकि लोगों के बीच बेटे का सम्मान बना रहे। भारी जेठ की गर्मी में पिता बाहर बरामदें में सोते हैं। गर्मी के मारे सो नहीं पाते बार–बार उठकर पंखा चलाते है। बेटा यह देख कर घर के अंदर सोने के लिए बोलता है किन्तु पिता उनका कहना नहीं मानते। इसी से थोड़ा खीझ कर पिता से कहता है– "मुहल्ले में हम लोगों का सम्मान

है, चार भले लोग आया–जाया करते हैं, आपको अंदर सोना चाहिए, आपको ढ़ंग के कपड़े पहनना चाहिए और चौकीदार की तरह रात को पहरा देना बहुत ही भद्दा लगता है।"[2] 'पिता' कहानी के पिता के इस व्यवहार को बेटा इस नजरिए से भी समझना चाहता है। पुराने समय में पिता घर की बहू–बेटियों के स्वच्छंदता में कोई बाधा न पड़े इसलिए बड़े बुजुर्ग घर में प्रवेश नहीं करते थे। पहले दरवाजे पर बच्चों का नाम लेकर पुकारते ताकि बहुएँ अपना पल्लू वगैरा सम्हाल कर रख लें। रात को बाहर बरामदें में ही सोते जिससे बाहर की प्राकृतिक हवा मिले साथ ही घर की रखवाली भी हो जाए। इसी वजह से बेटे पिता को अंदर सोने के लिए जोर–जबरदस्ती भी नहीं करते। पिता नहीं चाहते कि उनकी वजह से किसी को तकलीफ हो। वे किसी की जीवन शैली का विरोध नहीं करते, और न ही चाहते है कि उनकी जीवन शैली में कोई परिवर्तन लाया जाए। इसलिए बेटे को पिता एक भीमकाय शरीर की तरह लगता है। "उसे लगा पिता एक बुलंद भीमकाय दरवाजे की तरफ खड़े है जिससे टकरा–टकरा कर हम सब निहायत ही पिद्दी और दयनीय होते जो रहे हैं।"[3]

ज्ञानरंजन अपनी कहानी 'पिता' में नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की टकराहट को बखूबी अभिव्यक्ति कर पाए हैं। एक वृद्ध व्यक्ति अपने मूल्यों को किस तरह बचा कर रखते हैं। उन्हें नई पीढ़ी के मूल्यों से कोई परहेज नहीं हैं किन्तु वे उसमें अपने मूल्यों को विलीन करना नहीं चाहते इसके लिए उन्हें अपने बच्चों से टकराहट ही क्यों न झेलनी पड़े।

वृद्ध विमर्श के संदर्भ में ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' की तरह भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" कालजयी रचना है। इस रचना ने हिन्दी में वृद्ध विमर्श को एक निर्णायक मोड़ दिया है। माता–पिता जीवन की सारी पूंजी अपने बच्चों पर खर्च कर देते हैं। अपने बच्चों को ही बुढ़ापे की पूंजी समझते हैं परन्तु जब उनके तरफ से उपेक्षा मिलती है तब अंदर से टूट जाते हैं। मि. शामनाथ चीफ के आने से पहले माँ को अच्छे कपड़े और कुछ जेवर हो तो पहन लेने को कहते हैं। माँ जब कहती है सारे जेवर तुम्हारी पढ़ाई में खर्च हो गए तो ये बात वे सुनना भी पसंद नहीं करते हैं। माँ अपनी आर्थिक पूंजी और भावात्मक पूंजी अपने बेटे पर लूटा देती हैं परन्तु बेटे की नजर में उसका कोई महत्व नहीं है। आधुनिक पीढ़ी दिखावा को अपना सम्मान समझते हैं। उनके लिए समाज के सामने अपने को तामझाम में बनाए रखना ज्यादा महत्व लगता है। अक्सर बेटे–बहू की अच्छी नौकरी लगने के बाद माँ–बाप को घर में छोड़ कर बाहर चले जाते हैं। कभी–कभी सालों तक मिलने नहीं आते। इस स्थिति में वृद्ध माँ–बाप एक–दूसरे का सहारा बनते है। गाँव में वृद्ध माता–पिता की उपयोगिता तब तक होती है जब तक उनके हाथ–पाँव अच्छी तरह चल रहे होते हैं। जैसे 'चीफ की दावत' में माँ को चीफ के लिए फुलकारी बनाना ही सबसे बड़ा काम है। माँ फुलकारी बनाने में खुद को असमर्थ बताती है तो कहता है किसी तरह भी उसको फुलकारी चाहिए। इस स्थिति में एक लाचार माँ हरिद्वार जाने की इच्छा के अलावा क्या इच्छा रख सकती है। इसलिए कहती है– "नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा पहन लिया। अब यहाँ क्या करूँगी। जो थोड़े दिन जिंदगानी के बाकी है, भगवान का नाम लूंगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो।"[4] इन पंक्तियों में माँ के पीड़ा की पराकाष्ठा दिखाई पड़ती है। माँ इतनी मजबूत हो जाती है कि सबको छोड़कर हरिद्वार जाना सुखद लगता है।

समय एक निरंतर प्रवाहित प्रक्रिया है। जैसे–जैसे समय बदलता जाता है वैसे–वैसे उसकी मांग और परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। यही कारण है कि जनसंसार में बदलती परिस्थितियों के साथ ही साहित्य में भी सदैव नवीन समस्याओं और विमर्शों की चर्चा बनी रहती है। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, बाल विमर्श, किन्नर विमर्श के साथ ही साथ वृद्ध विमर्श की चर्चा जोरों पर है। वृद्ध विमर्श आजादी के बाद उभरे उच्च मध्यवर्ग से आरंभ हुआ। यह वही उच्च मध्यवर्ग है जो अपने गांव को छोड़कर शहर आया और बहुत जल्दी ही हाई–क्लास सोसाइटी में अपनी मजबूत जगह बनाने के लिए उत्सुक था। इस वर्ग को अपनी गँवई पहचान से ऐतराज था। वह अपनी जड़ों को धीरे–धीरे छोड़ रहे थे ऐसे में उन्हें अपने जन्मदाता यानी जड़ को हाईक्लास सोसायटी के समक्ष लाने में शर्मिंदा महसूस होता था। यहीं से वृद्धों की अवहेलना और अस्वीकृति आरंभ होती है। हमारे भारतीय समाज में घर की बागडोर घर के बुजुर्गों के हाथ में ही होता था, वही घर के समस्त फैसले लेते थे। धीरे–धीरे सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव होने से और युवा वर्ग के शिक्षा प्राप्त करने से तथा नए वर्ग के अपनी पसंद के प्रोफेशन में जाने के कारण युवा और वृद्ध के बीच टकराहट की स्थिति उत्पन्न होने लगी। कई बार बुजुर्गों के अपने सिद्धांत और कायदे–कानून के वजह से युवा वर्ग को परेशानियों का सामना करना पड़ता था, तो कई बार युवा वर्ग के अपने हिसाब से जीने और अपनी जिंदगी के फैसले स्वयं लेने की स्वच्छंदता की वजह से भी टकराहट और मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती थी।

यदि हम हिन्दी साहित्य की बात करें तो प्रेमचंद से ही वृद्धों की समस्या पर लिखित कहानियाँ देखने को मिलती है। जबकि पाश्चात्य साहित्य में 'सिमोन द बुआ' की सन् 1970 में प्रकाशित 'प्रकाशित ला' विएलेस्से' (फ्रेंच) से वृद्धावस्था पर चिंतन–मनन का प्रमाण मिलता है। हिन्दी में चंद्रमौलेश्वर प्रसाद जी ने इस कृति का सार–संक्षेप 'वृद्धावस्था विमर्श' नाम से किया। अब यदि बात करें हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श पर लिखी गई कृति की तो उसकी संख्या भी बहुत है। वृद्धावस्था पर लिखी गई कहानियाँ हैं– प्रेमचंद की कहानियाँ 'बूढ़ी काकी', 'माँ', 'मंत्र', 'अलग्योझा', 'स्वामिनी', 'विध्वंस', और 'सुभागी', जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ 'गुदड़ी के लाल', 'ममता', और 'बेड़ी', भीष्म साहनी की कहानियाँ 'चीफ की दावत', 'यादें', 'चाचा मंगलसेन' और 'खून का रिश्ता', यशपाल की कहानियाँ 'दुःख का अधिकार', 'समय', 'पागल है' और 'कौन जाने', सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी 'कैलाशी नानी', भगवती चरण वर्मा की कहानी 'वसीयत', मृदुला गर्ग की कहानियाँ 'उधार की हवा', चंद्रगुप्त विद्यालंकार का 'मास्टर साहब', प्रतिभा राय का 'पादुका पूजन', सूर्य बालाजी का 'सीढ़ी', 'दादी और रिमोट', 'सौगात' और 'दादी का खाजाना', शिवप्रसाद सिंह की 'दादी' माँ', शिवानी की कहानी 'दादी', रमेश उपाध्याय की 'शापमुक्ति', मनोज कुमार पांडे की 'जींस', विश्वंभरनाथ कौशिक की 'ताई', उषा प्रियंवदा की 'वापसी', राजी सेठ की कहानी 'उतनी दूर' और उसका आकाश', चित्रा मुद्गल की कहानी 'गेंद', 'आँख मिचौनी', गोविंद मिश्र की कहानी 'घेरे', ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता', नरेंद्र कोहली की कहानी 'शटल', प्रतिमा वर्मा की कहानी 'तिनकों का घोंसला', मंजुल भगत की कहानी 'दादी का बटुआ', हरि भटनागर की कहानी 'माई' आदि।

प्रतिमा वर्मा की कहनी में वृद्ध–विमर्ष :– प्रतिमा वर्मा की 'तिनकों का घोंसला' कहानी में दीनू काका कमला से कहते भी हैं– "बेटी कमला तुमने भी तो कोठीवाल नगर की

इस कोठी गुलमोहर और बगीचे को कितने ढ़ंग से संभाल कर रखा है। अंग्रेजों के जमाने की बनी यह कोठी आज भी मजबूती से खड़ी है। मजाल कि किसी कोने में कोई जला या धूल हो। आप भी अपने ससुर कर्नल साहब की तरह पूरी कोठी की मरम्मत लगातार करवाती रहती है।"[5]

कमला का बेटा ध्रुव कनाडा में रहकर अपने व्यापार को बड़ा करना चाहता है। अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए वह अपना पुश्तैनी मकान गुलमोहर बेचना चाहता है। गुलमोहर को बेचने के लिए ही ध्रुव लगभग 19 वर्षों में दूसरी बार भारत आता है। ध्रुव अच्छी तरह जानता है कि उसकी माँ गुलमोहर को बेचने के लिए कभी भी तैयार नहीं होगी। ध्रुव कनाडा में बसने के बाद वही का होकर रह गया। परंतु इस बार जब ध्रुव भारत आता है तो बार–बार अपनी माँ को अपने साथ कनाडा चलने के लिए कहता है और कमला बार–बार उसके साथ कनाडा जाने से मना कर देती है। कमला को लीला आंटी के इंग्लैंड में बेटे के पास रहने के कड़वे अनुभव याद थे इसलिए वह विदेश नहीं जाना चाहती थी। किसी भी बुजुर्ग के लिए बरसों से अपने बसे बसाए घर में रहने की आदत पड़ जाती हैं, वही घर उनके लिए आरामदायक होता है और सुकून देने वाला भी होता है। ऐसे में पूरी जिंदगी जिस घर में बिता चुके हैं उसे छोड़कर पराए देश में जाकर रहना बहुत मुश्किल होता है। वृद्धावस्था में व्यक्ति के लिए वही स्थान उपयुक्त होता है जहाँ उसकी युवावस्था व्यतीत हुई हो। लेखिका ने कमला की मनः स्थिति को व्यक्त करते हुए लिखा है– "कमला को लीला आंटी के इंग्लैंड में बेटे के पास रहने के अनुभव याद आ गए। कितनी दुःखी होकर भी लौटी थी। वहाँ की सभी आधुनिक सुविधाएँ होने के बावजूद देश का अकेलापन खाने को दौड़ता था। यहाँ तक कि चिड़ियों की आवाज सुनने को तरस गई थीं। लीला आंटी फिर कभी लौट कर वापस इंग्लैंड नहीं गई।"[6]

कमला अपने बेटे से बहुत प्यार करती थी। उसका बेटा ध्रुव ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा था। उसने बचपन से ही अपने बेटे की खुशियों का बहुत ध्यान रखा था। ध्रुव जब रात–रात भर पढ़ता था तो उसकी माँ उसे रातभर कॉफी बना कर देती थी। ध्रुव नैनीताल के शैवुड कॉलेज में पढ़ता था और छुट्टियों में अपने माता–पिता के पास आता था। छुट्टियाँ खत्म होने के बाद ध्रुव जब वापस कॉलेज जाने लगता था तो कमला उसका कितना जतन किया करती थी। उसके रास्ते में खाने के लिए कई चीजें अपने हाथों से बनाकर उसके बैग में रखती थी जैसे मठरी, नारियल के कटे हुए टुकड़े, चिरौंजी वाली बर्फी, देशी घी के बेसन के लड्डू आदि। कमला उसे बहुत हिदायतें भी दिया करती थी– "नैनीताल में ठंड बहुत पड़ती है तुम प्रतिदिन 2 लड्डू के साथ गर्म दूध पी लेना।... सर्दी नहीं लगेगी और मेरा लाल भूखा भी नहीं रहेगा।"[7] एक माँ अपनी संतान को खुद से भी ज्यादा प्रेम करती है, उस पर अपनी ममता लुटाती है परंतु वही संतान उनके बुढ़ापे में उन्हें बोझ समझकर अकेला जीने के लिए छोड़ देती है। यही वह प्रश्न है जो वृद्ध विमर्श पर बात करते हुए बार–बार हमारे सामने आता है। कमला कभी भी अपने बेटे के साथ कनाडा नहीं जाना चाहती है परंतु बेटे के बार–बार जोर डालने पर तथा अपने पोते के मोह में वह तैयार हो जाती है। ध्रुव अपनी माँ के हाँ करते ही गुलमोहर को बेचने की तैयारी में लग जाता है और मार्केट प्राइज से बहुत ही कम कीमत में गुलमोहर कोठी को बेच देता है। गुलमोहर को बेचने का मन कमला का बिल्कुल भी नहीं था। गुलमोहर बिकने के बाद कमला की मनःस्थिति बहुत ही

विचारणीय थी। उसका चित्रण लेखिका ने इस प्रकार किया है– "कमला सबके सामने सामान्य बनकर साहस दर्शाती। परंतु अकेले में सदमे और परेशानियों के आँसू बहते और उनकी हिचकियाँ रुकते ना बनती। कई दिनों से उसकी भूख और प्यास भी समाप्त हो गई।"[8]

कमला अपने बेटे के साथ कई सपने सजाए कनाडा के लिए निकल पड़ती है। ध्रुव दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुँचकर चेक–इन के बहाने अपनी माँ को हवाई अड्डे पर ही छोड़कर अकेला कनाडा चला जाता है। कमला को एयरपोर्ट पर बैठे–बैठे बेटे का इंतजार करते हुए कब नींद आ जाती है उसे पता ही नहीं चलता है। जब उसकी आंख खुलती है तो उसके पैरों तले की जमीन खिसक चुकी रहती है। कमला एक माँ है उसने निस्वार्थ भाव से अपने बेटे पर अपनी ममता लुटाई थी। ध्रुव उसका अपना ही खून था, ऐसे में वह अपने बेटे पर किसी भी तरीके का अविश्वास कैसे कर सकती थी। बेटे द्वारा एयरपोर्ट पर छोड़कर चले जाने के बाद भी कमला को विश्वास नहीं होता है कि उसके बेटे ने उसके साथ धोखा किया है। एक बूढ़ी औरत जो विधवा है, शारीरिक रूप से कमजोर भी है और अपने पति के यादों के सहारे जीवित रहने की चेष्टा कर रही है, इसके अलावा उसे अपने बरसों पुराने परिवेश से भी उखाड़ दिया गया है। ऐसे में वह महिला इस बुढ़ापे में कहां जाएगी? बेटे द्वारा किए गए विश्वासघात के बाद तो कमला में सोचने–समझने की शक्ति ही खत्म हो जाती है। ऐसा लगता है जैसे उस पर पहाड़ ही टूट पड़ा है। वह भीतर से बहुत दुखी है और क्रोधित भी है परंतु वह किसी से कुछ कह नहीं सकती है। यदि कोई व्यक्ति किसी अपने पर नाराज हो तो उस पर अपनी नाराजगी बया कर के अपने मन को शांत कर सकता है परंतु कमला के लिए तो बड़ी ही त्रासद स्थिति है क्योंकि वह अपने क्रोध को अपने बेटे पर जाहिर भी नहीं कर सकती क्योंकि वह तो उसे अकेला छोड़कर चला गया है। इतना कुछ होने के बाद भी कमला मन ही मन सोचती है– "बेटे की नियत पर कैसे शक करूं। संभवतः उसने ऐसी साजिश नहीं की होगी। कोई काम पड़ गया होगा। नौकरी पर कार्यवश उसे वापस जाना पड़ गया होगा। मैंने तो सोचा भी ना था कि ध्रुव कभी ऐसा करेगा? बस कोई संकट उस पर ना आए.... ।"[9]

एक मां अपनी संतान पर कभी भी शक नहीं कर सकती है। परंतु कमला को जब अपने हैंड बैग में एक सफेद लिफाफा मिलता है जिसमें उसके नए घर के ताले की चाबी औरत के नाम एक फ्लैट के बैनामे के कागजात थे। ध्रुव कभी भी अपनी मां को अपने साथ कनाडा लेकर नहीं जाना चाहता था, उसने तो बस एक साजिश रची थी अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए। पैसे की चकाचौंध में ध्रुव जैसे ना जाने कितने ही लोग अपने माता–पिता को बोझ समझकर अकेले जीने के लिए छोड़ देते हैं।

उपसंहारः– निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि इन सभी साहित्यकारों के साहित्य वृद्ध विमर्श के कई प्रश्नों को उठाते है तथा पाठकों को बार–बार अपनी पुरानी पीढ़ी के बारे में सोचने पर मजबूर करते है। हमारे भारत में कभी भी वृद्धा आश्रम नहीं था परंतु आज वह भी खुल चुका है। आज कई लोग बड़े–बड़े मेलों और आयोजनों में वृद्धों को छोड़कर चले आते हैं। इसी के साथ यह सभी रचनाएँ परिवार को सुदृढ़ करने का भी संदेश देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. साहनी भीष्म, चीफ की दावत, पृ–56
2. ज्ञानरंजन, पिता, पृ–13
3. वही, पृ–26
4. साहनी भीष्म, चीफ की दावत, पृ–53
5. वर्मा प्रतिभा, तिनकों का घोसला, पृ–12
6. वही, पृ–42
7. वही, पृ–45
8. वही, पृ–47
9. वही, पृ–52